लॉक डाउन में मानव धर्म

भावना भट्ट
ग्राम - विजयपुर धनखल
जिला - अल्मोड़ा, उत्तराखंड

अन्य लोगों की तरह लॉक डाउन मेरी भी जिंदगी के लिए संघर्ष की एक नई गाथा लेकर आया था। रोजमर्रा की जिंदगी में उतार-चढ़ाव को देखते हुए हम लोग जीवन जीने का सहारा ढूंढ ही रहे थे कि कोरोना की वजह से हुए लॉक डाउन ने ज़िंदगी के पहिए को एकदम रोक दिया। परंतु हमने हार नहीं मानी और इसी परिस्थति में दिनचर्या को जीने के लिए फिर से कदम बढ़ाने लगे।

यह सच है कि महामारी हर व्यक्ति को अलग-अलग तरीके से प्रभावित करती है। लेकिन एक सच यह भी है कि प्रत्येक व्यक्ति उसे अलग अलग दृष्टिकोण से देखता है और उसमें जीने का प्रयास करता है। हमारे लिए भी यह महामारी एक भयानक रूप लेकर आई थी। लेकिन हम इसे एक सकारात्मक सोच को लेकर आगे बढ़े। हमने इस मुश्किल समय में भी मानवता के मंत्र को ज़िंदा रखते हुए दूसरों की मदद का बीड़ा उठाया और फिर शुरू हुआ लॉक डाउन से प्रभावित लोगों की मदद करने का सिलसिला।

इस सफर में कुछ साथी मिले, तो कुछ बड़े जनों का नेतृत्व मिला। जिसमें अल्मोड़ा ज़िला के द्वाराहाट पंचायत स्थित श्री सी पी जोशी जी का विशेष योगदान रहा। जिनकी मदद से दिल्ली के श्री आरसी वीरवानी जी के साथ संपर्क हुआ। जिनका सहयोग सराहनीय रहा। जोशी जी ने एक योजना बनाई जिसमें हमने लोगों के जीवन जीने के लिए कुछ दिन का राशन वितरण करने की कोशिश की। सबसे पहले हमारा ध्यान अपने समूह के ज़रूरतमंद साथियों पर गया और फिर लोगों की सेवा करने का सिलसिला यहीं से शुरू हुआ। श्री सी पी जोशी और आरसी विरवानी जी के सानिध्य से सामग्री इकट्ठा की तथा लगभग 60 ज़रूरतमंदों में उन्हें वितरित किया गया, जिसमें आटा, चावल, तेल, मसाले दाल इत्यादि सामान था। इसके लिए समूह के सदस्यों ने क्षेत्र में रह रहे गरीब मज़दूरों की मदद के लिए योजना के तहत गांव गांव जाकर उनकी आर्थिक स्थिति का सर्वेक्षण किया ताकि राशन उचित और वास्तविक ज़रूरतमंदों तक पहुँच सके।

वास्तव में इस महामारी में मध्यम वर्ग के लोगों पर सबसे बड़ा संकट आया है क्योंकि जिनके पास बीपीएल अंत्योदय खाद्यान्न वाले राशन कार्ड हैं सरकार भी इन्हीं लोगों की सहायता कर रही है। परंतु जिनके पास एपीएल का राशन कार्ड है उन्हें मात्र दो ढाई किलो गेहूं और दो-तीन किलो चावल ही उपलब्ध हो पा रहा है। जो संकट के इस दौर में किसी भी परिवार के लिए कम है।

इस वर्ग के साथ सबसे बड़ी समस्या यह है कि लॉक डाउन में एक तो इन्हें काम नहीं मिल रहा है और दूसरी बात यह कि एपीएल कार्ड होने के कारण सरकार से भी पर्याप्त मात्रा में राशन नहीं मिलता है। वहीं समाज में अपना स्टेटस बरकरार रखने के लिए इस वर्ग के लोग किसी से सहायता मांगने से भी हिचकिचाते हैं।

लिहाजा मेरा मानना है कि ऐसे मध्यमवर्गीय परिवारों को भी सहायता की जरूरत है उनके पास रोजमर्रा का काम नहीं है। परंतु किसी प्रकार से अपने स्टेटस को मेंटेन किए हुए हैं, जबकि राशन की जरूरत इन्हें भी उतनी ही है जितनी एक बीपीएल कार्डधारियों को। साथ ही वह लोग जो वास्तव में गरीब हैं और किसी प्रकार भी अपनी रोजी-रोटी की व्यवस्था नहीं कर पा रहे हैं उन्हें भी सरकार या संस्थाओं या व्यक्तिगत तरीकों से किसी ने किसी प्रकार का सहयोग करने की आवश्यकता है। मैं समझती हूं कि सच्चे अर्थों में यही मानव धर्म है।